COURSE :- BACHELOR OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE (BLIS)

# PAPER :- 2ND (Management of Library & Information Centres)

## TOPIC :- Types of Budget

(बजट के प्रकार)

उद्देश्य :- इस पाठ में बजट के प्रकार को समझाया गया है ।

PREPARED BY :- DINESH SINGH, CHIEF COORDINATOR, LIBRARY SCIENCE, NOU

## बजट (Budget)

ग्रन्थालय के सफल संचालन के लिए धन की आवश्यकता होती है जिसकी व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक होता है। चूँकि किसी भी ग्रन्थालय की आय एवम् व्यय छोटा कार्य नहीं है अत: आगामी वर्ष हेतु इसका पूर्व में ही अनुमान करना पड़ता है। ग्रन्थालय के आय एवम् व्यय के इसी वार्षिक अनुमान को ही हम **ग्रन्थालय बजट** कहते हैं। अत: किसी भी ग्रन्थालय में बजट उसके आगामी वर्ष में होने वाली आय एवम् व्यय का अनुमानित लेखा है। **विल्सन** एवम् **टॉबर** के शब्दों में बजट एक निश्चित समय के लिए ग्रन्थालय की अनुमानित आय तथा व्यय का वित्तीय लेखा है।

ग्रन्थालयों में बजट बनाने की कुछ विधियाँ होती हैं जिनके अनुसार बजट बनाये जाते हैं जिन आधारों पर वे बजट तैयार किए ज़ाते हैं उन्हीं आधारों पर उनका नामकरण होता है। बजट के वे **प्रकार निम्न** होते हैं -

**1. लाइन प्रति लाइन बजट (Line-by-line Budget) –** लाइन-प्रति-लाइन बजट में व्यय के मदों को विस्तृत भागों में विभाजित कर दिया जाता है जैसे–पुस्तकें एवम् पत्र-पत्रिकाएँ, वेतन एवम् भत्ते, उपकरण एवम् साज-सज्जा तथा अन्य व्यय आदि जिन्हें पुनः अन्य उप-भागों में विभाजित किया जाता है। बजट निर्माण करने की यह सामान्य एवम् परम्परा से चली आ रही विधि है जिसमें पिछले वर्ष के प्रत्येक मद के व्यय पर वर्तमान (आगामी) व्यय का अनुमान लगाया जाता है तथा जिसमें प्रत्येक मद में 5% से 10% तक की वृद्धि यह मानकर प्रदर्शित की जाती है कि भविष्य के प्रोग्राम उतने ही आवश्यक हैं जितने पिछले वर्ष थे। इस प्रकार निर्मित बजट में भविष्य हेतु कोई नवीन योजना प्रस्तुत नहीं की जाती है तथा ग्रन्थालय के क्रियाकलापों, गतिविधियों तथा सेवाओं का मूल्यांकन भी नहीं किया जाता है।

**2. प्रोग्रामिंग बजट (Programming Budget) –** प्रोग्रामिंग बजट में ग्रन्थालय के व्यय के मदों के आधार पर व्यय का अनुमान नहीं लगाया जाता है बल्कि इसमें मुख्य केन्द्रबिन्दु ग्रन्थालय के क्रियाकलाप (Programmes) होते हैं तथा व्यय हेतु धनराशि का अनुमान प्रोग्राम अथवा ग्रन्थालय सेवाओं के आधार पर निश्चित किया जाता है। इस प्रकार के बजट निर्माण हेतु ग्रन्थालय अपने प्रोग्रामों को विभिन्न वर्गों में विभाजित कर लेते हैं जो ग्रन्थालय की संगठनात्मक संरचना के आधार पर विभाजित किये जा सकते हैं जैसे–प्रशासनिक, तकनीकि, पाठक सेवाएँ आदि। इस प्रकार प्रोग्रामिंग बजट में प्रत्येक विभाग के क्रियाकलापों (प्रोग्रामों) के लिए धनराशि एवम् उसके व्यय का प्रावधान किया जाता है।

**3. परफोर्मेन्स बजट (Performance Budget) –** परफोर्मेन्स बजट निर्माण की विधि प्रोग्रामिंग बजट के ही समान होती है केवल अन्तर इस बात का है कि इसमें प्रोग्रामों पर बल न दिया जाकर उपलब्धियों (परफोर्मेन्स) पर बल दिया जाता है। इसमें व्यय करने का आधार ग्रन्थालय के क्रियाकलापों को करने में कार्मिकों की कार्यक्षमता पर अधिक बल दिया जाता है तथा इस हेतु ग्रन्थालय में किसी निश्चित समय में ग्रन्थालय के सभी क्रियाकलापों से सम्बन्धित परिमाणात्मक तथ्यों के संग्रह करने की आवश्यकता होती है तथा ग्रन्थालय एवम् उसके कर्मचारियों की उपलब्धियों को ज्ञात करने हेतु लागत-लाभ विश्लेषण तथा

मूल्यांकन करने के स्थापित सिद्धान्त उपयोग में लाये जाते हैं। इस प्रकार के बजट में गुण की अपेक्षा परिमाण पर बल दिया जाता है।

**4. प्लानिंग-प्रोग्रामिंग बजट (Planning-Programming Budget)–** इस प्रकार के बजट में उपरोक्त दोनों प्रकार के बजटों की विशेषताओं को आधार बनाकर निर्माण किया जाता है जिसमें मुख्य केन्द्रबिन्दु प्लानिंग (योजना) पर होता है। इस प्रकार का बजट ग्रन्थालय के उद्देश्यों एवम् लक्ष्यों को लेकर प्रारम्भ होता है तथा प्रोग्रामों एवम् सेवाओं की स्थापना पर समाप्त होता है।

**5. शून्य आधारित बजट (Zero Based Budget) –** शून्य आधारित बजट विचारों की दृष्टि से प्लानिंग-प्रोग्रामिंग बजट के समान ही होता है। इस प्रकार के बजट निर्माण में भूत (पिछले वर्ष) में क्या हुआ है इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है बल्कि वर्तमान सामयिक गतिविधियों पर अधिक ध्यान दिया जाता है तथा प्रत्येक प्रोग्राम अथवा क्रियाकलाप का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाता है तथा उसके लिए वित्तीय व्यवस्था पिछले वर्ष का सन्दर्भ दिये बिना प्रस्तुत की जाती है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि वित्त की माँग प्रत्येक वर्ष नवीन सिरे से की जाती है तथा पिछले वर्ष के व्यय से इस बजट में कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जाता है।